



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 1855]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 23, 2018/ ज्येष्ठ 2, 1940

No. 1855]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 23, 2018/JYAISTHA 2, 1940

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 मई, 2018

**का.आ. 2050(अ).**—मंत्रालय प्रारूप अधिसूचना का.आ. 3232(अ), दिनांक 1 दिसम्बर, 2015 के अधिक्रमण में, अधिसूचना का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) तथा उपधारा (3) के साथ पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जारी करने का प्रस्ताव करती है, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) की अपेक्षानुसार, जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है; जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है, और यह सूचित किया जाता है कि उक्त प्रारूप अधिसूचना पर, उस तारीख से, जिसको इस अधिसूचना को अंतर्विष्ट करने वाले भारत के राजपत्र की प्रतियां जनसाधारण को उपलब्ध करा दी जाती हैं, साठ दिन की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जाएगा ;

ऐसा कोई व्यक्ति, जो प्रारूप अधिसूचना में अंतर्विष्ट प्रस्तावों के संबंध में कोई आपत्ति या सुझाव देने का इच्छुक है, वह इस प्रकार विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा विचार किए जाने के लिए, अपनी आपत्ति या सुझाव सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अलीगंज, नई दिल्ली-110003 को या ई-मेल [esz-mef@nic.in](mailto:esz-mef@nic.in) पर लिखित रूप में भेज सकता है।

प्रारूप अधिसूचना

कमलांग वन्यजीव अभयारण्य का क्षेत्रफल 783.0 वर्ग किलोमीटर है और यह भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले में स्थित है।

**और,** इस अभयारण्य को हाल ही में नमदफा राष्ट्रीय उद्यान, जो बाघ रिजर्व भी है, का विस्तार करके उसमें जोड़ा गया है। यह जैव विविधता से समृद्ध है जो विभिन्न वनस्पति एवं जीवजन्तुओं के लिए आदर्श एवं उपयुक्त है। इसके पारिस्थितिकीय, वानस्पतिक, जीवजन्तुओं संबंधी और प्राकृतिक महत्व को ध्यान में रखते हुए, इस अभयारण्य को राज्य की राजपत्र अधिसूचना सं. सीडब्ल्यूएल/डी/58/88/3175-3250, दिनांक 18 अक्टूबर, 1988 के तहत अधिसूचित किया गया था;

**और**, इस अभयारण्य में विभिन्न प्रकार के वन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व है जिनमें उष्णकटिबंधीय, शीतोष्ण और अल्पाइन वन शामिल हैं। इस अभयारण्य की तलहटी और निचले क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय आर्द्र सदाबहार वन पाए जाते हैं। वनों की तलहटी और अभयारण्य के निचले क्षेत्रों में विद्यमान है, जबकि नमदफा बाघ रिजर्व की सीमा पर "दाभभूम शिखर" के ऊपरी हिस्से में अल्पाइन वनस्पति की बहुलता है;

**और**, इस अभयारण्य में प्रचुर बायोटा और जैव विविधता है जो विभिन्न वनस्पति और जीवजंतुओं के लिए उपयुक्त है। इस अभयारण्य में लगभग 105 विभिन्न वृक्ष प्रजातियों, 61 स्तनधारी प्रजातियों, 20 सरीसृप प्रजातियों, 5 उभयचर प्रजातियों, 11 जलीय प्रजातियों और 105 पक्षी जीव प्रजातियों को संरक्षण और आश्रय मिलता है। यहां की महत्वपूर्ण वनस्पति प्रजातियों में *डिप्टोकार्पस मैक्रोकार्पस* (होलोग), *शोरिया असामिका* (साल), *एल्टिंगिया एक्सेल* (जटली), *मोरास लेविगाता* (बोला), *डिलेनिया इंडिका* (आउटेंगा), *टर्मिनलिया मेरियोकार्पा* (होलॉक), *टूना सिलिएटा*, *सिनामोमियम सीसीडोडाफननाई*, *कास्टानोपसिस इंडिका* (हिगोरी), *कैनारियम रेसीनिफेरम*, *डुवांगा ग्रैंडफोलिया* (खोकान), *डिक्सॉक्सिलोन हैमिल्टोनि* (बंदरडीमा), *क्रिप्टोमोरिया पेनिस्लेटाइटा*, *एलेकार्पस जेनिटरस* (रुद्राक्ष), *मैग्नोलिया ग्रिफिथी*, *माइकलिया चैम्पाक* (टीता चैम्पा), *वेतिसा लान्साफोलिया*, *अल्बिजिया प्रोसेरा* (कोरोई), *डेंड्रोकैलेमस हैमिल्टोनि* (काको), *लीआ एक्मनेट*, *मेलेस्टोमा मालाबारीका*, *पिनांगा ग्रेसिलस*, *कैलामस फ्लोरिबुन्दस* (रेडांग) और साइथाई स्वा. शामिल हैं;

**और**, इस अभयारण्य में मुख्यतः 61 जीवजंतु प्रजातियों को आश्रय मिलता है जिनमें *मैनीस पैन्टाडैक्टाइला* (चाईनिस साल), *ताल्पा लेकुरा* (व्हाइट-टेल्ड मोल), *क्रॉसीदुरा एट्यूनेट* (ग्रे श्रिव), *टुपाया बेलेंगेरी* (ट्री श्रिव), *मार्कोग्लोसस सोब्रिनस* (लॉग-टंगड हिल फ्रूट बैट), *निकिटकेवस कुकेंग* (लजीला वानर), *मैकाका एसामेंनसिस* (आसामी मैकाक), *ट्रैकीपिचकस पिपेटस* (कैण्ड लंगुर), *कुओन अल्पाइंस* (जंगली कुत्ता), *उर्सस थिबेटनस* (एशियाटिक काला भालू), *माटर्स फ्लेविगुला* (येलो थ्रोएटेड मार्टिन), *लुट्रा लुट्रा* (सामान्य ऊदबिलाव), *सस स्क्रॉफा* (जंगली सुअर), *विवर्रा जिबेटा* (बड़े भारतीय गंधबिलाव), *पैराडोक्सुरस हेमैप्रोडिट्स* (सामान्य पॉम गंध बिलाव), *हेपैस्टस एडवाइसी* (ग्रे नेवला), *फेलिस चॉज़* (जंगली बिल्ली), *प्रीओनेलूरस बेंगलेंसिस* (तेंदुआ बिल्ली), *पाडॉफेलिस मामॉराटा* (मार्बल्ड कैट), *पेंथेरा पार्दस* (तेंदुआ), *पेंथेरा टिगरिस* (बाघ), *एलीफस मैक्सिमस* (हाथी), *मुन्टियाकस मुंटजैक* (मुंजक), *नामोरहेडस सुमरात्रिसिस* (हिमालयन सेरो), *रतुफा बाइकोलोर* (मलाया विशालकाय गिलहरी), *कैलोसिअयुरस पायजेरथ्रस* (होरी-बेलिड गिलहरी), *ड्रीममोइस लोकरिया* (ऑरेंज-बेलिड हिमालय गिलहरी), *पेटोरिस्टा पेटोरिस्टा* (कॉमन फ्लाइंग गिलहरी), *बैंडिकोटा इंडिका* (लार्ज बैंडीकोट रैट) और *हिस्ट्रिक्स ब्रेक्यूरन* (चाइनिज साही) शामिल हैं;

**और**, यह अभयारण्य पक्षी जीवों की दृष्टि से समृद्ध है और यहां 105 पक्षी प्रजातियों को आश्रय मिलता है जिनमें *लोफुरा लुकोमेलोनोस* (कालिज कबूतर), *पिकस फ्लाविनुचा* (ग्रेटर येलो नेप वुडपीकर), *मेगालैमा लिनेट* (लिनेटेड बारबेट), *हेल्सिओन कोरोमाण्डा* (रड्डी किंगफिशर), *सेन्ट्रोपस बेंगलेंसिस* (लेसर कौकल), *डुकुला बडिया* (माउंटेन शाही कबूतर), *ओटस स्पिलोकेफालस* (माउंटेन स्कोप उल्लू), *चलकोफापस इंडिका* (एसराल्ड कबूतर), *स्पिलोरनिस चीला* (क्रेस्टेड सर्पेंट ईगल), *सिक्का चाइनेनसिस* (ग्रीन मैगपाई), *प्रिनिया होडगसोनि* (ग्रे-ब्रेस्टेड प्रिनिया), *डिकरुस रेमिफर* (लेसर रैकेट-टेल्ड ड्रॉगो), *चैमार्रोरनिस ल्यूकासफालस* (व्वाइट-कैपड वाटर रेडस्टार्ट), *सिट्टा कास्टानिया* (चेस्टनट-बिल्ड नाटहेच), *फाइलोसकोपस ट्रोचिलोइडेस* (ग्रीनिश लीफ वार्बलर), *गरुलैक्स पैक्टोरालिस* (ग्रेटर-नेकलेस लाफिंग थ्रश), *एक्सीफिरायनचस सुपरसिलियारिस* (स्लेण्डर-बिल्ड स्किमिटर ब्रैबलर), *मिनला इगनोटिनक्टा* (रेड टेल्ड मिनला), *अल्सिप्पे रुफोगुलोरिस* (रुफोस-थ्रोटेड फुलवेट्टा), *युहिना कास्टानिकेपस* (स्ट्राइटेड युहिना), *पैराडोक्सोरनिस गुलारिस* (ग्रे-हेडेड पैरोटबिल), *अरचनोथेरा मैग्रा* (स्ट्रीकड स्पाइडर हंटर), *डेंडोनानथस इंडिकस* (फॉरेस्ट वेगटेल), *एंथस रुफुल्सुस* (पैड्डी फिल्ड पिपिट) और *लोनचुरा पेनकटुलाटा* (स्केली-ब्रेस्टेड मुनिया) शामिल हैं;

**और**, इस अभयारण्य में लगभग 25 महत्वपूर्ण उभयचर और सरीसृप प्रजातियों को संरक्षण और आश्रय मिलता है। यहां की महत्वपूर्ण सरीसृप प्रजातियों में *पिक्साइडिया मुघोटी* (केलबॉक्स कछुए), *गीक्को जेको* (टोके), *पिक्टोलामेस गुलारिस* (ब्लू थ्रोएटेड फॉरेस्ट ग्रेसर), *मुबाय कैरिन्टा* (कॉमन सनस्किक), *टैकीड्रोसम सेक्सलाइनेटस* (एशियाई लॉग टेल्ड ग्रास छिपकली), *वाराणस बेंगलेंसिस* (मॉनिटर लिजार्ड), *टाईफलोप्स डियारडी* (डियार्डस ब्लाइंड स्नेक), *पायथन मोलुरस बावितेटस* (बर्मसे पाइथन), *कोलॉगन्थस रैडस* (कॉपरहेड सॉप), *पारेस मॉन्टिकोला* (असम स्नेल ईटर), *पीतास कोरोस* (इंडो-चाइनिज रैट स्नेक), *डेंडोलिपीस पेंटस* (पेंटेड ब्रॉज़ेबैक), *बोइगा गोकुल* (इस्टर्न गामा), *ओफिओफैगस हन्न* (किंग कोबरा) और *त्रिमेरुसुस युआनानेंसिस*- (ग्रीन पिट वाइपर) हैं। 5 उभयचर प्रजातियों में *दत्ताफ्रीनस मेलानोस्टिक्टस* (कॉमन टूड), *हाला एनेक्टेंस* (भारतीय हीलिड फ्रॉंग), *माइक्रोहाला ऑरनेट* (ऑरनामेंटल पिग्मी मेंढक), *अमोलप्स एसेमेन्सीस* (असमिया कैस्केड मेंढक) और *रैकोफोरस मैक्सिमस* (लार्ज ट्री मेंढक) शामिल हैं;

**और**, अभयारण्य 11 मछली प्रजातियों का आश्रय प्रदान करता है जिसमें *एंगुइला बेंगलेंसिस* (लांग फिन एयल), *सल्मास्टोमा बेकाइला* (लार्ड रेजर बेली मिनोव), *दानियो अक्कीनिफिनटस* (डोरिकाना), *बारिलियस वरना* (वरना ब्राइला), *पंटिकस सरना* (चिनीपुथी), *चुगुइनियस चगुनियो* (केंटापुथी), *गारा गोत्यला* (गारा), *लेबियो पंगिसिया* (सिलघोरिया), *टॉर टार* (टोरी मोहसीर), *टोर पुतिटोरा* (गोल्डन माहसीर) और *वॉलगो अचु* (बोरली) शामिल है;

और, इस अभयारण्य में एक दुर्लभ वनस्पति प्रजाति सिलोअम नुडुम और एक संकटापन्न जीव-जंतु प्रजाति हुलांक गिबन को संरक्षण, सुरक्षा और आश्रय भी मिलता है;

और, यह अभयारण्य विभिन्न प्रकार की वनस्पति, जीवजन्तुओं और पक्षी-जीवों का आश्रय-स्थल है, और इसमें मिजोरम और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के स्थानिक वन्यजीवों की दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों को संरक्षण और आश्रय मिलता है। अतः पारिस्थितिकी और पर्यावरण की दृष्टि से इस अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्र का संरक्षण और सुरक्षा करना आवश्यक है जिससे कि इसमें मौजूद जैव-विविधता और इसके पर्यावरण की रक्षा और संवर्धन किया जा सके;

**अतः,** अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की उपधारा (1) तथा धारा 3 की उपधारा (2) एवं उपधारा (3) के खंड (v) और खंड (xiv) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए अरुणाचल प्रदेश राज्य में कमलांग वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 117.0 वर्ग किलोमीटर के साथ 0.0 किलोमीटर (नमदफा टाइगर रिजर्व द्वारा उत्तर, पश्चिम और दक्षिण की ओर अभयारण्य की सीमा नजदीक है, इसलिए 0.0 किलोमीटर प्रस्तावित है) से 5.0 किलोमीटर तक विस्तारित क्षेत्र को कमलांग वन्यजीव अभयारण्य पारिस्थितिकी संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

### 1. पारिस्थितिक संवेदी जोन का विस्तार और सीमा.-

- (1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का क्षेत्र 117.0 वर्ग किलोमीटर है। अभयारण्य की सीमा के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार 0.0 किलोमीटर से 5.0 किलोमीटर तक है।
- (2) कमलांग वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण **उपाबंध I** के रूप में संलग्न हैं।
- (3) कमलांग वन्यजीव अभयारण्य के भू-निर्देशांक और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भू मण्डलीय स्थिति प्रणाली निर्देशांक **उपाबंध II** के रूप में संलग्न है।
- (4) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का गूगल पृथ्वी मानचित्र **उपाबंध III** के रूप में संलग्न है।
- (5) भू-निर्देशांकों के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन के कमलांग वन्यजीव अभयारण्य का मानचित्र **उपाबंध IV** के रूप में संलग्न हैं।
- (6) अरुणाचल प्रदेश राज्य में कमलांग वन्यजीव अभयारण्य की अवस्थिति को दर्शाने वाला राज्य मानचित्र **उपाबंध V** के रूप में संलग्न हैं।

### 2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना :-

1. राज्य सरकार, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजन के लिए, राजपत्र में अंतिम अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदनार्थ एक आंचलिक महायोजना तैयार करेगी।
2. राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट रीति से तथा प्रासंगिक केंद्रीय और राज्य विधियों तथा केंद्रीय सरकार द्वारा जारी मार्गनिर्देशों, यदि कोई हों, के अनुरूप बनायी जाएगी।
3. आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय संबंधी सरोकारों को शामिल करने के लिए इसे राज्य सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से बनाया जायेगा, :-
  - i. पर्यावरण विभाग;
  - ii. वन और वन्यजीव विभाग;
  - iii. कृषि और बागवानी विभाग ;
  - iv. भूमि राजस्व और समाधान विभाग;
  - v. ग्रामीण विकास विभाग;
  - vi. शहरी विकास विभाग;
  - vii. नगरपालिका विभाग;

- viii. पंचायती राज विभाग;
  - ix. पारि-पर्यटन सहित पर्यटन विभाग;
  - x. सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण विभाग;
  - xi. लोक निर्माण विभाग।
4. जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, आंचलिक महायोजना में वर्तमान में अनुमोदित भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा तथा आंचलिक महायोजना में सभी अवसंरचनाओं और क्रियाकलापों को अधिक दक्ष और पर्यावरण अनुकूल बनाने की व्यवस्था की जाएगी।
  5. आंचलिक महायोजना में वन रहित और अवक्रमित क्षेत्रों के सुधार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, आवाह क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भू-जल के प्रबंधन, मृदा और नमी के संरक्षण, स्थानीय जनता की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के ऐसे अन्य पहलुओं की व्यवस्था की जाएगी। जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है,।
  6. आंचलिक महायोजना में सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामीण एवं शहरी बस्तियों, वनों की श्रेणियों एवं किस्मों, कृषि क्षेत्रों, ऊपजाऊ भूमि, उद्यानों एवं उद्यानों की तरह के हरित क्षेत्रों, बागवानी क्षेत्रों, बगीचों, झीलों और अन्य जल निकायों की सीमा का निर्धारण किया जाएगा।
  7. इस योजना से संबंधित सहायक मानचित्र में विद्यमान और प्रस्तावित भूमि के उपयोग की विशेषताओं का ब्यौरा दिया जाएगा।
  8. आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी संवेदी जोन में होने वाले विकास का विनियमन किया जाएगा तथा सारणी में सूचीबद्ध निषिद्ध किए गए, विनियमित किए क्रियाकलापों का पालन किया जाएगा तथा स्थानीय जनता की आजीविका की सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी-अनुकूल विकास का भी सुनिश्चय और संवर्धन किया जायेगा।
  9. आंचलिक महायोजना क्षेत्रीय विकास योजना की सह-कालिक होगी।
  10. अनुमोदित आंचलिक महायोजना, राज्य एवं जिला स्तरीय निगरानी समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज होगी ताकि वह इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार अपने निगरानी के कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

**3. राज्य सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय:-** राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को **प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात् :-**

**1. भू-उपयोग:**

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में वनों, बागवानी क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, उद्यानों तथा आमोद-प्रमोद के प्रयोजन के लिए चिन्हित किए गए खुले स्थानों का वृहद वाणिज्यिक या आवासीय परिसरों या औद्योगिक क्रियाकलापों के लिए प्रयोग या संपरिवर्तन नहीं किया जाएगा:

(ख) परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भाग (क) में विनिर्दिष्ट प्रयोजन से भिन्न प्रयोजन के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन, निगरानी समिति की सिफारिश पर और सक्षम प्राधिकारी के पूर्वानुमोदन से क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम तथा यथा लागू केन्द्रीय/राज्य सरकार के अन्य नियमों तथा विनियमों के अधीन तथा इस अधिसूचना के उपबंधों द्वारा स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा:-

- (i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ करना तथा नई सड़कों का संनिर्माण;
- (ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का निर्माण और नवीकरण;
- (iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;
- (iv) ग्रामीण उद्योगों सहित कुटीर उद्योग;
- (v) सुविधा भण्डार और गृह वास सहित स्थानीय सुविधाएं जो पारिस्थितिकी पर्यटन में सहायक हैं; और
- (vi) बढावा दिए गए और पैरा-4 में वर्णित क्रियाकलाप :

(ग) परंतु यह भी कि क्षेत्रीय शहरी नियोजन अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन के बिना राज्य सरकार के अन्य नियमों तथा विनियमों का अनुपालन किए बिना तथा संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों अथवा तत्समय प्रवृत्त विधि, जिसके अंतर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007

का 2) भी है, का अनुपालन किए बिना वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का प्रयोग अनुज्ञात नहीं होगा:

(घ) परंतु यह भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाली भूमि के अभिलेखों में हुई किसी त्रुटि को, निगरानी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात्, राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार सुधारा जाएगा और उक्त त्रुटि को सुधारने की सूचना केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी।

(ङ) परंतु यह भी कि उपर्युक्त त्रुटि का सुधार करने में, इस उप-पैरा में यथा उपबंधित के सिवाय, किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन शामिल नहीं होगा।

(च) परंतु यह भी कि वन क्षेत्र और कृषि क्षेत्र जैसे हरित क्षेत्र में कोई पारिणामी कमी नहीं की जाएगी। अनुप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में पुनः वनीकरण करने पर्यावासों एवं जैव विविधता की बहाली के प्रयास किए जाएंगे।

2. **प्राकृतिक जल स्रोत** -- आंचलिक महायोजना में सभी प्राकृतिक जल स्रोतों, नदियों/चैनल/जलमार्गों के आवाह क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण और पुनरुद्धार की योजना शामिल की जाएगी। इन क्षेत्रों में या इनके आसपास के क्षेत्रों में विकास क्रियाकलापों को प्रतिषिद्ध करने के लिए राज्य सरकार द्वारा सख्त दिशानिर्देश बनाए जाएंगे।

### 3. पर्यटन/पारिस्थितिकी पर्यटन:

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पारिस्थितिकी संवेदी जोन संबंधी पर्यटन महायोजना के अनुसार होगा।

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना पर्यटन विभाग द्वारा राज्य के पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से बनायी जाएगी।

(ग) पर्यटन महायोजना आंचलिक महायोजना का घटक होगी।

(घ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित होंगे, :-

- (i) कमलांग वन्यजीव अभयारण्य की सीमा से 1.0 किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इसमें जो भी अधिक निकट हो, किसी होटल या रिसोर्ट का नया सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं किया जाएगा। तथापि, पारिस्थितिकी पर्यटन सुविधाओं के लिए वन्यजीव अभयारण्य की सीमा से 1.0 किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक पर्यटन महायोजना के अनुसार नए होटलों और रिसोर्टों की स्थापना पूर्व परिभाषित एवं अभीहित क्षेत्रों में अनुज्ञात होगी।
- (ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अन्दर सभी नए पर्यटन क्रिया-कलापों या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों तथा पारिस्थितिकी पर्यटन पर बल देने वाले राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण द्वारा जारी पारिस्थितिकी पर्यटन सम्बन्धी दिशा-निर्देशों (समय-समय पर यथा संशोधित) के अनुसार होगा।
- (iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन होने तक, पर्यटन के विकास तथा विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल विशिष्ट संवीक्षा तथा निगरानी समिति की सिफारिश के आधार पर संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुज्ञात किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नये होटल/रिसोर्ट या वाणिज्यिक प्रतिष्ठान का सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं होगा।

4. **प्राकृतिक विरासत** – पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले बहुमूल्य प्राकृतिक विरासत के सभी स्थलों जैसे कि सभी जीन पूल रिजर्व क्षेत्र, शैल संरचना, जल प्रपात, झरने, दर्रे, उपवन, गुफाएं, स्थल, वनपथ, रोहण मार्ग, उत्प्रपात आदि की पहचान की जाएगी तथा उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी जो आंचलिक महायोजना का भाग होगी।

5. **मानव निर्मित विरासत स्थल** - पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, कृत्रिम क्षेत्रों, ऐतिहासिक, कलात्मक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण के लिए विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी जो आंचलिक महायोजना का भाग होगी।

6. **ध्वनि प्रदूषण** -- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के अधीन बनाए गए ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 के अनुसार किया जाएगा।

7. **वायु प्रदूषण** - पारिस्थितिकी संवेदी जोन में, वायु प्रदूषण का निवारण एवं नियंत्रण, वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) के उपबंधों और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाएगा।

8. **बहिष्कार का निस्सारण** - पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उपचारित बहिष्कारों का निस्सारण, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अन्तर्गत शामिल किए गए पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सारण संबंधी साधारण मानकों या राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों के अनुसार किया जाएगा।

9. **ठोस अपशिष्ट** - ठोस अपशिष्टों का निपटान और प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), दिनांक 8 अप्रैल, 2016 के तहत प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 तथा राज्य सरकार द्वारा अधिसूचित प्रासंगिक नियमों के अनुसार किया जाएगा;

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों (ईएसएम) का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट के सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन की अनुज्ञा होगी।

10. **जैव चिकित्सा अपशिष्ट**- (क) जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा :-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 343 (अ), तारीख 28 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों (ईएसएम) का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप जैव-चिकित्सा अपशिष्ट को सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल ठोस प्रबंधन की अनुज्ञा होगी।

11. **प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन**: - पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

12. **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन**: - पारिस्थितिकी संवेदी जोन में निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं. सा.का.नि 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित संनिर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

13. **ई-अपशिष्ट**: - पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई-अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित तथा समय-समय पर यथा संशोधित ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

14. **सड़क-यातायात**: - सड़क यातायात को पर्यावास-अनुकूल तरीके से विनियमित किया जाएगा और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध शामिल किए जाएंगे। आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदित होने तक, निगरानी समिति प्रासंगिक अधिनियमों और उनके तहत बनाए गए नियमों एवं विनियमों के अनुसार सड़क यातायात के अनुपालन की निगरानी करेगी।

15. **वाहन जनित प्रदूषण**: - वाहन जनित प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण लागू विधियों के अनुसार किया जाएगा। स्वच्छतर ईंधन जैसे कि सीएनजी, एलपीजी आदि के प्रयोग के प्रयास किए जाएंगे।

16. **औद्योगिक ईकाइयां**: - (i) सरकारी राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख को या उसके बाद पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए प्रदूषणकारी उद्योग की स्थापना की अनुज्ञा नहीं होगी।

(ii) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना की अनुज्ञा होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जायेगा।

17. **पहाड़ी ढलानों का संरक्षण**: - पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार किया जायेगा:

(क) आंचलिक महायोजना में पहाड़ी ढलानों के उन क्षेत्रों को दर्शाया जाएगा जिनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।

(ख) जिन विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों या ढलानों में अत्यधिक भू-क्षरण होता है, उनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।

18. केन्द्र सरकार और राज्य सरकार, यदि आवश्यक समझें तो, इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए, अन्य उपाय विनिर्दिष्ट करेंगी।

4. **पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्रतिषिद्ध या विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची** - पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) के उपबंधों तथा तटीय विनियमन जोन, अधिसूचना 2011 और पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 सहित उसके अधीन बने नियमों और वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (1980 का 69), भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16), वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (1972 का 53) सहित अन्य लागू नियमों तथा उनमें किए गए संशोधनों के अनुसार शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति से विनियमित होंगे, अर्थात् :-

## सारणी

क्रम सं.	क्रियाकलाप	विवरण
(1)	(2)	(3)
<b>क.प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप</b>		
1.	वाणिज्यिक खनन ।	(क) स्थानीय निवासियों की वास्तविक घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किए जाने वाले क्रियाकलापों, जिनमें घर के निर्माण या मरम्मत और मकान बनाने एवं अन्य क्रियाकलापों के लिए देशी टाइलें या ईंटें बनाने के लिए जमीन की खुदाई शामिल है, को छोड़कर सभी नई और वर्तमान (लघु एवं बृहद खनिज) पत्थर खोदने एवं तोड़ने वाली ईकाइयां तत्काल प्रभाव से निषिद्ध की जाती हैं ; (ख) खनन क्रियाकलाप, टी.एन. गोदावर्मन थिरूमलपाद बनाम भारत संघ के मामले में वर्ष 1995 की रिट याचिका (सिविल) सं 202 में दिनांक 4 अगस्त, 2006 तथा गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में वर्ष 2012 की रिट याचिका (सिविल) सं. 435 में दिनांक 21 अप्रैल, 2014 के माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश के अनुसार में किए जाएंगे।
2.	उद्योगों की स्थापना जिसके अंतर्गत (जल, वायु, मृदा, ध्वनि आदि) प्रदूषण उत्पन्न करने वाले नए तेल और गैस खोज उद्योग भी हैं।	(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में नए उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी उद्योगों का विस्तार करने की अनुज्ञा नहीं होगी। (ख) जब तक कि इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, फरवरी, 2016 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में केवल गैर- प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना की अनुज्ञा होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाएगा।
3.	बृहत जल विद्युत परियोजनाओं और सिंचाई परियोजनाओं की स्थापना ।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) ।
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का प्रयोग या उत्पादन या प्रसंस्करण ।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) ।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या भूमि क्षेत्र में अनुपचारित बहिःस्रावों का निस्सारण ।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) ।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में नई आरा मिल स्थापित करने और विद्यमान आरा मिलों का विस्तार करने की अनुज्ञा नहीं होगी ।
7.	ईट भट्टों की स्थापना ।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) ।
8.	जलावन लकड़ी का वाणिज्यिक उपयोग।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) ।
<b>ख.विनियमित क्रियाकलाप</b>		
9.	होटलों और रिजॉर्टों की वाणिज्यिक स्थापना ।	(क) पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों हेतु लघु अस्थायी संरचनाओं के निर्माण को छोड़कर, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से 1.0 किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, नए वाणिज्यिक होटलों और रिजॉर्टों की स्थापना अनुज्ञात नहीं होगी। (ख) परंतु, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से 1.0 किलोमीटर के बाहर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, पर्यटन महायोजना और यथा लागू दिशा-निर्देशों के अनुसार सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप करने या विद्यमान क्रियाकलापों का विस्तार करने की अनुज्ञा होगी।

10.	फार्मों, कॉर्पोरेट, कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने की वाणिज्यिक पशुधन संपदा और कुक्कुट फार्मों की स्थापना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
11.	संनिर्माण क्रियाकलाप।	<p>(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से 1.0 किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, किसी भी प्रकार के नए वाणिज्यिक संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी;</p> <p>(ख) परंतु स्थानीय निवासियों को अपनी आवास सम्बन्धी निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पैरा 3 के उप पैरा (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित अपने प्रयोग के लिए, अपनी भूमि में भवन उप-विधियों के अनुसार संनिर्माण करने की अनुज्ञा होगी :-</p> <p>(i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ करना और नई सड़कों का संनिर्माण;</p> <p>(ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;</p> <p>(iii) फरवरी, 2016 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किए गए वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी लघु उद्योगों की स्थापना;</p> <p>(iv) ग्रामीण उद्योगों सहित कुटीर उद्योगों, सुविधा भण्डारों और गृहवास सहित पारिस्थितिकी पर्यटन में सहायक स्थानीय सुविधाओं की व्यवस्था; और</p> <p>(v) इस अधिसूचना में सूचीबद्ध बढ़ावा दिए गए क्रियाकलाप।</p> <p>(ग) परन्तु गैर-प्रदूषणकारी लघु उद्योगों से संबंधित संनिर्माण क्रियाकलाप लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति से विनियमित किए जाएंगे और वे न्यूनतम होंगे।</p> <p>(घ) 1.0 किलोमीटर से आगे ये आंचलिक महायोजना के अनुसार विनियमित होंगे।</p>
12.	गैर प्रदूषणकारी लघु उद्योग।	फरवरी, 2016 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी उद्योग तथा पारिस्थितिकी संवेदी जोन में देशी सामग्रियों से उत्पाद बनाने वाले अपरिसंकटमय लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, बागबानी या कृषि आधारित उद्योग सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञात होंगे।
13.	वृक्षों की कटाई।	<p>(क) राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना वन या सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर वृक्षों की कटाई की अनुज्ञा नहीं होगी।</p> <p>(ख) वृक्षों की कटाई केंद्रीय या संबंधित राज्य के अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार विनियमित होगी।</p>
14.	वन उत्पादों और गैर काष्ठ वन उत्पादों (एनटीएफपी) का संग्रह।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
15.	विद्युत और संचार टॉवर लगाने, तार-बिछाने तथा अन्य बुनियादी ढांचे की व्यवस्था।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा। भूमिगत केबल बिछाने को बढ़ावा दिया जाएगा।
16.	नागरिक सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचा।	लागू विधियों, नियमों और विनियमों तथा मौजूदा दिशानिर्देशों के अनुसार उपशमन उपायों के साथ किया जायेगा।
17.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ बनाना और नई सड़कों का निर्माण।	लागू विधियों, नियमों और विनियमों तथा मौजूदा दिशानिर्देशों के अनुसार उपशमन उपायों के साथ किया जायेगा।
18.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के ऊपर से गर्म वायु के गुब्बारे, हेलीकाप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइट्स उड़ाना आदि।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।



19.	पर्वतीय ढलानों और नदी तटों का संरक्षण ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
20.	रात्रि में वाहन यातायात का संचलन ।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित होगा ।
21.	स्थानीय जनता द्वारा अपनायी जा रही वर्तमान कृषि और बागवानी प्रथाओं के साथ डेयरियां, दुग्ध उत्पादन, जल कृषि और मत्स्य पालन।	स्थानीय जनता के प्रयोग के लिए लागू विधियों के अधीन अनुज्ञात होगा ।
22.	प्राकृतिक जल निकायों या भू क्षेत्र में उपचारित/अपशिष्ट जल/बहिस्त्राव का निस्सारण ।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिस्त्राव के निस्सारण से बचा जाएगा। उपचारित अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण और पुनःउपयोग के प्रयास किए जाएंगे अन्यथा उपचारित अपशिष्ट जल/ बहिस्त्राव का निस्सारण लागू विधियों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।
23.	सतही और भूजल का वाणिज्यिक निष्कर्षण ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
24.	कृषि या अन्य उपयोग के लिए खुले कुएं/ बोर कुएं आदि का निर्माण ।	समुचित प्राधिकारी द्वारा विनियमित किया जाएगा तथा क्रियाकलाप की सख्त निगरानी की जाएगी।
25.	प्लास्टिक थैलों का प्रयोग ।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में पॉलिथीन बैग के प्रयोग की अनुज्ञा होगी परन्तु यह विशिष्ट आवश्यकता के आधार पर लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
26.	विदेशी प्रजातियों को लाना ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
27.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
28.	वाणिज्यिक संकेत बोर्ड और होर्डिंग ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा ।
<b>ग. संवर्धित क्रियाकलाप</b>		
29.	वर्षा जल संचयन ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
30.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
31.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी का अंगीकरण ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
32.	ग्रामीण कारीगरी सहित कुटीर उद्योग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
33.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का प्रयोग ।	बायोगैस, सौर प्रकाश इत्यादि को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
34.	कृषि वानिकी ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
35.	पारिस्थितिकी अनुकूल यातायात का प्रयोग ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
36.	कौशल विकास ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
37.	अवक्रमित भूमि/वनों या पर्यावासों की बहाली ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।
38.	पर्यावरण के प्रति जागरूकता ।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा ।

### 5. निगरानी समिति.-

केंद्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, पारिस्थितिक संवेदी जोन की प्रभावी निगरानी के लिए निम्नलिखित को शामिल करके एक जिला स्तरीय निगरानी समिति गठित करती है:--

(i)	उपायुक्त, लोहित जिला, तेजु, अरुणाचल प्रदेश	-अध्यक्ष;
(ii)	सदस्य-सचिव, अरुणाचल प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, इटानगर	-सदस्य;
(iii)	शहरी विकास विभाग, जिला लोहित का प्रतिनिधि, तेजु, अरुणाचल प्रदेश	-सदस्य;
(iv)	ग्रामीण विकास विभाग, जिला लोहित का प्रतिनिधि, लोहित जिला, तेजु, अरुणाचल प्रदेश	-सदस्य;
(v)	लोक निर्माण विभाग, जिला लोहित का प्रतिनिधि, तेजु, अरुणाचल प्रदेश	-सदस्य;
(vi)	अरुणाचल प्रदेश राज्य की किसी प्रतिष्ठित संस्था/विश्वविद्यालय से एक पारिस्थितिकी विशेषज्ञ जिले अरुणाचल प्रदेश सरकार द्वारा नामित किया जायेगा	-सदस्य;
(vii)	प्रकृति संरक्षण (विरासत संरक्षण सहित) के क्षेत्र में सक्रिय गैर-सरकारी संगठन का प्रतिनिधि, जिसे अरुणाचल प्रदेश सरकार द्वारा नामित किया जाएगा	-सदस्य;
(viii)	डीएफओ, कमलांग वन्यजीव अभयारण्य, वकरो, अरुणाचल प्रदेश	-सदस्य सचिव।

### 6. विचारार्थ विषय :-

- (1) निगरानी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन की निगरानी करेगी।
- (2) निगरानी समिति का कार्यकाल तीन वर्ष या राज्य सरकार द्वारा नई समिति का पुनः गठन किए जाने तक होगा और इसके बाद निगरानी समिति राज्य सरकार द्वारा गठित की जाएगी।
- (3) निगरानी समिति वास्तविक विशिष्ट दशाओं के आधार पर उन क्रियाकलापों की संवीक्षा करेगी जो भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का. आ. 1533 (अ), तारीख 14 सितम्बर, 2006 की अनुसूची और पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अन्तर्गत आते हैं। इनमें वे प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप शामिल नहीं हैं जो इस अधिसूचना के पैरा 4 में दी गई सारणी के कॉलम (3) में यथा विनिर्दिष्ट हैं तथा उन्हें केन्द्र सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण स्वीकृति के लिए भेजेगी।
- (4) निगरानी समिति वास्तविक स्थल-विशिष्ट दशाओं के आधार पर उन क्रियाकलापों की संवीक्षा करेगी जो भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची के अंतर्गत नहीं आते हैं, परन्तु जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आते हैं। इनमें वे प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप शामिल नहीं हैं जो इस अधिसूचना के पैरा-4 में दी गई सारणी के कॉलम (3) में यथा विनिर्दिष्ट हैं तथा उन्हें संबंधित विनियामक प्राधिकरणों को भेजेगी।
- (5) निगरानी समिति का सदस्य-सचिव या संबंधित कलेक्टर या संबंधित कार्य प्रभारी इस अधिसूचना के उपबंधों का उल्लंघन करने वाले किसी व्यक्ति के विरुद्ध पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अंतर्गत शिकायत दर्ज करने के लिए सक्षम होगा।
- (6) निगरानी समिति संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संघों के प्रतिनिधियों या संबंधित पक्षों को प्रत्येक मामले में आवश्यकताओं के आधार पर अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी।
- (7) निगरानी समिति प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की स्थिति के अनुसार अपनी वार्षिक कार्रवाई रिपोर्ट राज्य के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय में मुख्य वन्यजीव वार्डन को, **उपाबंध VI** में दिए गए प्रपत्र के अनुसार, उस वर्ष की 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।
- (8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय निगरानी समिति को उसके कृत्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह उचित समझे।

7. इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेगी।

8. इस अधिसूचना के उपबंध भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय या राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित किए गए या पारित किए जाने वाले आदेश, यदि कोई हो, के अधधीन होंगे।

[फा. सं. ए.-25/3/2015-ईएसजेड/ईआई]

ललित कपूर, वैज्ञानिक 'जी'

## उपाबंध ।

**कमलांग वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण**

इसकी सीमा अभयारण्य के उत्तर पश्चिम कोण में भू-निर्देशांक 27°54' 31.608"उ और 96°27'11.279"पू से आरंभ होकर अभयारण्य सीमा के साथ पूर्व दिशा की ओर जाती है। कमलांग रिजर्व वन के पारिस्थितिकी संवेदी जोन में शून्य मीटर होने के कारण यह भू-निर्देशांक 27°52'57.191"उ और 96° 33'3.089"पू, 27°51'12.139"उ और 96°36'37.231"पू, 27°50'49.139"उ और 96°40'55.499"पू, 27°49'44.638"उ और 96°41'5.392"पू, के बिंदुओं से होते हुए जाती है। वहां से यह भू-निर्देशांक 27°47'29.976"उ और 96°47'15.832"पू पर अभयारण्य के उत्तर पूर्वी कोने तक जाती है।

वहां से यह भू-निर्देशांक 27°46'51.791"उ और 96°50'11.706"पू के बिंदु तक लगभग 5.0 किलोमीटर पूर्व की ओर जाकर बिंदु 27°44'28.039"उ और 96°48'34.740"पू और 27°41'35.581"उ और 96°51'1.174"पू, 27°40'25.723"उ और 96°52'5.891"पू, 27°36'51.365"उ और 96°54'5.335"पू से होते हुए अभयारण्य सीमा के समानान्तर 5.0 किलोमीटर दक्षिण की ओर जाती है।

वहां से यह बिंदु 27°37'29.154"उ और 96°51'16.495 "पू पर अभयारण्य सीमा के 5.0 किलोमीटर पश्चिम की ओर जाती है। वहां से अभयारण्य सीमा के साथ पश्चिम की ओर जाती है। नमदफा बाघ रिजर्व के शून्य किमी. होने के कारण यह बिंदु 27°36'56.866"उ और 96°46'32.365"पू, 27°39'37.264"उ और 96°42'22.986"पू, 27°38'16.958"उ और 96°31'28.970"पू और 27°39'2.750"उ और 96°25'48.349"पू से होकर गुजरती है।

वहां से यह अभयारण्य सीमा के साथ उत्तर की ओर जाती है। कमलांग रिजर्व वन पारिस्थितिकी संवेदी जोन के शून्य किमी. होने का कारण यह भू-निर्देशांक 27°41'4.798"उ और 96°25'1.650"पू, 27°43'57.083"उ और 96°24'32.742"पू और 27°47'51.403"उ और 96°27'35.352"पू, के बिंदुओं से होकर गुजरती है और वहां से आरम्भ बिंदु तक जाती है।

## उपाबंध-II

**कमलांग वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भू-निर्देशांक  
संरक्षित क्षेत्र की सीमा के मुख्य बिंदुओं के भू-निर्देशांक**

क्र. स.	देशांतर (पू) (डीएमएस प्रारूप)	अक्षांश (उ) (डीएमएस प्रारूप)
1	96°27'11.279"	27°54'31.608"
2	96°33'3.089"	27°52'57.191"
3	96°36'37.231"	27°51'12.139"
4	96°40'55.499"	27°50'49.139"
5	96°41'5.392"	27°49'44.638"
6	96°47'15.832"	27°47'29.967"
7	96°45'12.222"	27°45'4.270"
8	96°48'26.244"	27°40'4.886"
9	96°49'22.267"	27°38'53.574"
10	96°51'16.495"	27°37'29.154"
11	96°46'32.365"	27°36'56.866"
12	96°42'22.986"	27°39'37.264"
13	96°31'28.970"	27°38'16.958"

14	96°25'48.349"	27°39'2.750"
15	96°25'1.650"	27°41'4.798"
16	96°24'32.742"	27°43'57.083"
17	96°27'35.352"	27°47'51.403"

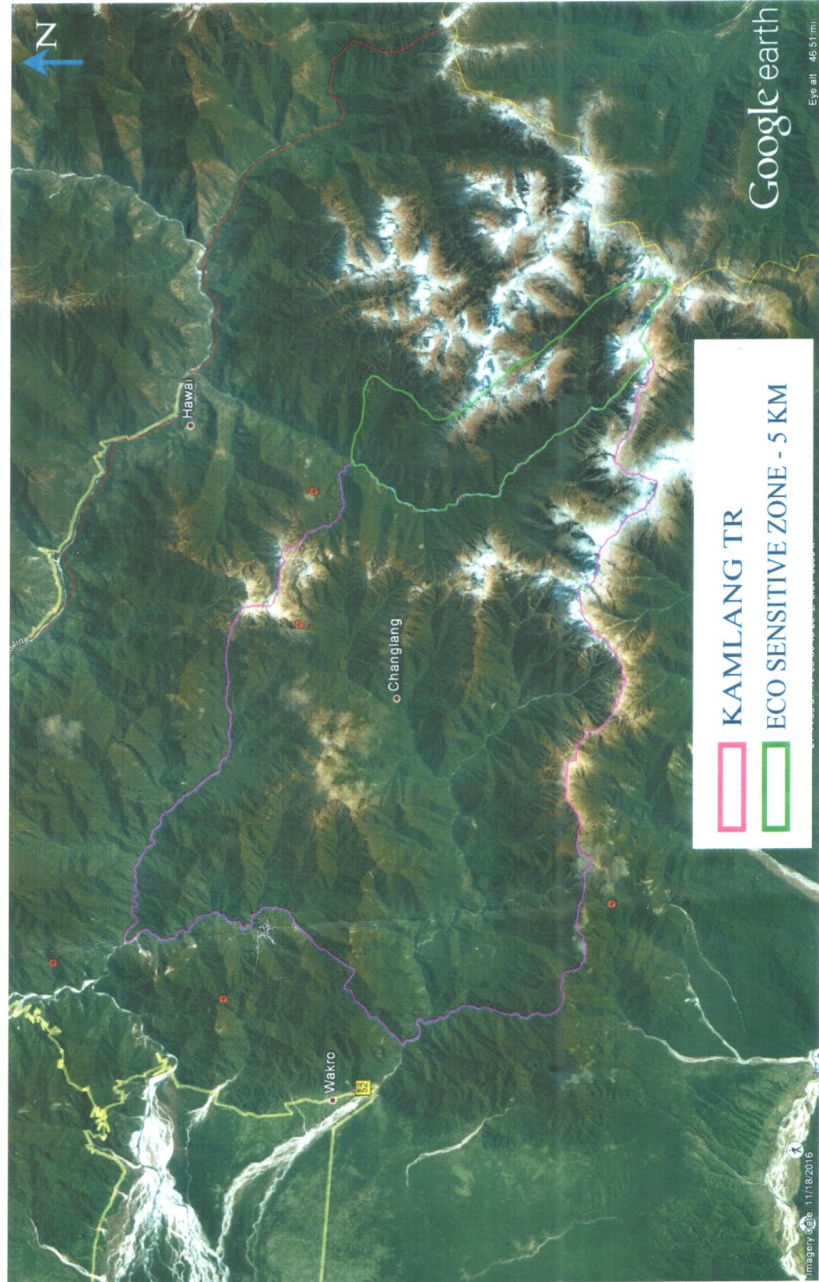
**पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा के मुख्य बिंदुओं के भू-निर्देशांक**

क्र. स.	देशांतर (पू) (डीएमएस प्रारूप)	अक्षांश (उ) (डीएमएस प्रारूप)
1	96°27'11.279"	27°54'31.608"
2	96°33'3.089"	27°52'57.191"
3	96°36'37.231"	27°51'12.139"
4	96°40'55.499"	27°50'49.139"
5	96°41'5.392"	27°49'44.638"
6	96°47'15.832"	27°47'29.976"
6ए	96°50'11.706"	27°46'51.791"
7ए	96°48'34.740"	27°44'28.039"
8ए	96°51'1.174"	27°41'35.581"
9ए	96°52'5.891"	27°40'25.723"
10ए	96°54'5.335"	27°36'51.365"
10	96°51'16.495"	27°37'29.154"
11	96°46'32.365"	27°36'56.866"
12	96°42'22.986"	27°39'37.264"
13	96°31'28.970"	27°38'16.958"
14	96°25'48.349"	27°39'2.750"
15	96°25'1.650"	27°41'4.798"
16	96°24'32.742"	27°43'57.083"
17	96°27'35.352"	27°47'51.403"

**उपाबंध-III**

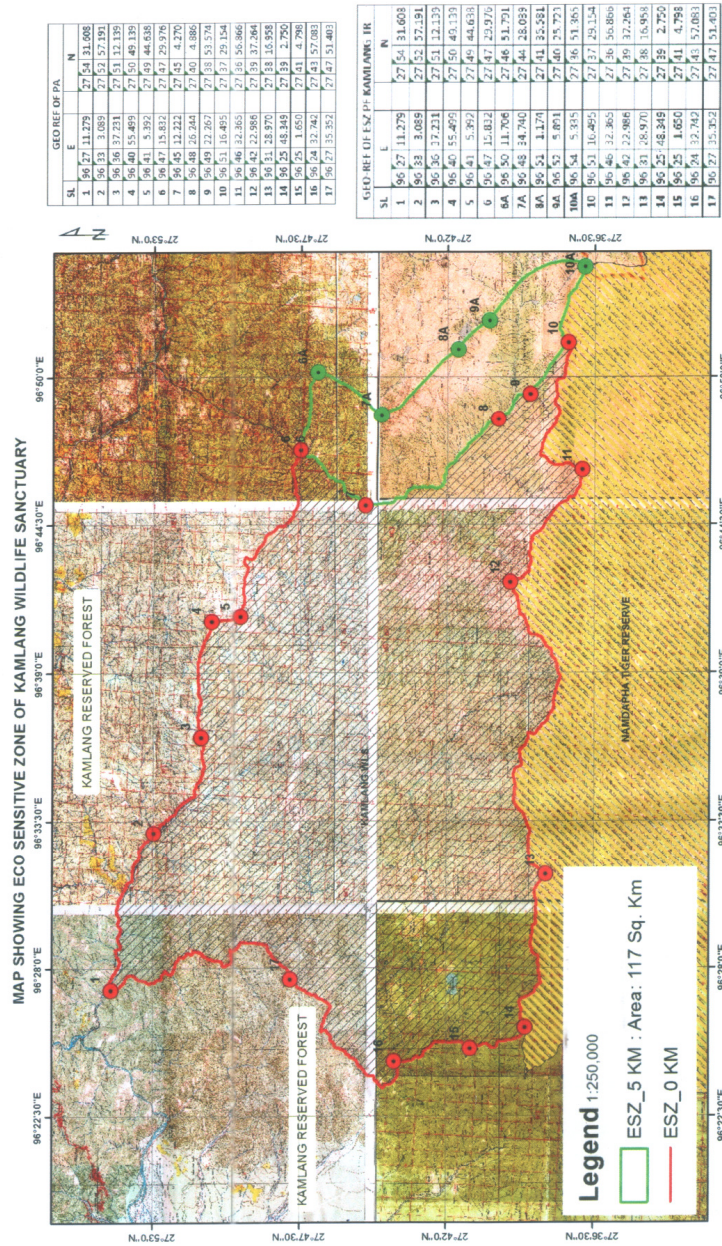
कमलांग वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन का गूगल पृथ्वी मानचित्र

MAP OF KAMLANG TR SHOWING ECO SENSITIVE ZONE



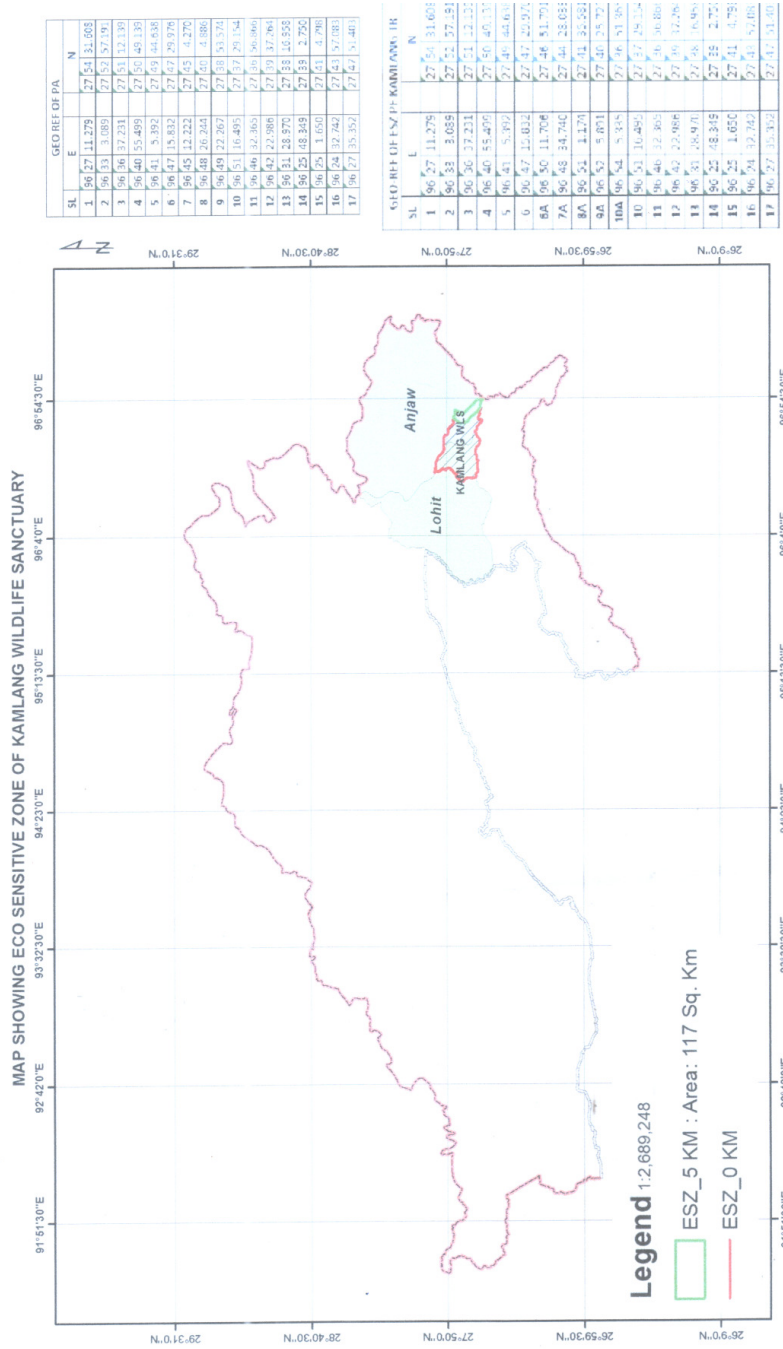
भू-निर्देशांकों के साथ कमलांग वन्यजीव अभयारण्य पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र

Annexure - I



उपाबंध V

राज्य मानचित्र पर कमलांग वन्यजीव अभयारण्य पारिस्थितिकी संवेदी जोन की अवस्थिति को दर्शाने वाला मानचित्र



## उपाबंध VI

## पारिस्थितिकी संवेदी जोन की निगरानी समिति - की गई कार्रवाई संबंधी रिपोर्ट का प्रपत्र

1. बैठकों की संख्या और तारीख ।
2. बैठकों का कार्यवृत्त : कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का वर्णन करें । बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक उपाबंध में प्रस्तुत करें ।
3. पर्यटन महायोजना सहित आंचलिक महायोजना की तैयारी की स्थिति ।
4. भू-अभिलेखों की स्पष्ट त्रुटियों के सुधार के लिए निबटाए गए मामलों का सार। विवरण उपाबंध के रूप में संलग्न करें।
5. पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार । विवरण एक पृथक उपाबंध के रूप में संलग्न करें ।
6. पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार । विवरण एक पृथक उपाबंध के रूप में संलग्न करें ।
7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सार ।
8. कोई अन्य महत्वपूर्ण मामला ।

## MINISTRY ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE

## NOTIFICATION

New Delhi, the 21st May, 2018

**S.O. 2050(E).**—In supersession of Ministry's draft notification S.O. 3232(E), dated 1<sup>st</sup> December, 2015, the following draft of the notification, which the Central Government proposes to issue in exercise of the powers conferred by sub-section (1), read with clause (v) and clause (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) is hereby published, as required under sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, for the information of the public likely to be affected thereby; and notice is hereby given that the said draft notification shall be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing this notification are made available to the public;

Any person interested in making any objections or suggestions on the proposals contained in the draft notification may forward the same in writing, for consideration of the Central Government within the period so specified to the Secretary, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road, Aliganj, New Delhi-110003, or send it to the e-mail address of the Ministry at [eszmef@nic.in](mailto:eszmef@nic.in).

## Draft Notification

**WHEREAS**, the Kamlang Wildlife Sanctuary is spread over an area of 783.0 Sq. Km and situated at Lohit District in the North-Eastern Indian state of Arunachal Pradesh.

**AND WHEREAS**, the Sanctuary has recently been added to the extension of Namdapha National Park, also a Tiger Reserve, and holds a rich biodiversity ideally suited for the various floral and faunal forms. Considering its ecological, floral, faunal and natural significance, Sanctuary was notified *vide* state Gazette Notification No. CWL/D/58/88/3175-3250 dated October 18, 1988;

**AND WHEREAS**, the Sanctuary is represented by various type of forest areas including tropical, temperate and Alpine forest. The tropical wet evergreen forests are present in the foothills and lower reaches of the Sanctuary, where as Alpine vegetation is expected dominating in the upper reaches of "Daphabhum peak" just bordering Namdapha Tiger Reserve;

**AND WHEREAS**, the Sanctuary holds rich biota and biodiversity suited for the various floral and faunal forms. The Sanctuary conserves and support about 105 different tree species, 61 mammal species, 20 species of reptiles, 5 amphibian species, 11 aquatic species and 105 avifauna species. The important floral



species include *Diptrocarpus macrocarpus* (Hollong), *Shorea assamica* (Sal), *Altingia excelsa* (Jutli), *Moras levigata* (Bola), *Dillenia indica* (Outenga), *Terminalia myriocarpa* (Hollock), *Toona ciliata*, *Cinnamomum cecidodaphnae*, *Castanopsis indica* (Higori), *Canarium resiniferum*, *Duabanga grandifolia* (Khokan), *Dioxylon hamiltonii* (Banderdima), *Cryptomeria penicyata*, *Eleocarpus genitrus* (Rudraksh), *Magnolia griffithii*, *Michelia champaka* (Tita champa), *Vetisa lanceaefolia*, *Albizia procera* (Koroi), *Dendrocalamus hamiltonii* (Kako), *Leea acuminata*, *Melastoma malabarica*, *Pinanga gracilus*, *Calamus floribundus* (Raidang) and *Cyathea* sp.;

**AND WHEREAS**, the Sanctuary supports 61 faunal species majorly including *Manis pentadactyla* (Chinese Pangolin), *Talpa leucura* (White-tailed mole), *Crocidura attenuate* (Grey shrew), *Tupaia belangeri* (Tree shrew), *Marcoglossus sobrinus* (Long-tongued hill fruit bat), *Nycticebus coucang* (Slow loris), *Macaca assamensis* (Assamese macaque), *Trachypithecus pipeatus* (Capped langur), *Cuon alpinus* (Wild Dog), *Ursus thibetanus* (Asiatic black bear), *Martes flavigula* (Yellow throated martin), *Lutra lutra* (Common otter), *Sus scrofa* (Wild pig), *Viverra zibetha* (Large Indian civet), *Paradoxurus hermaphrodites* (Common palm civet), *Herpestes edwardsii* (Grey mongoose), *Felis chaus* (Jungle cat), *Prionailurus bengalensis* (Leopard cat), *Pardofelis marmorata* (Marbled cat), *Panthera pardus* (Leopard), *Panthera tigris* (Tiger), *Elephas maximus* (Elephant), *Muntiacus muntjak* (Barking deer), *Naemorhedus sumatraensis* (Himalayan serow), *Ratufa bicolor* (Malayan giant squirrel), *Callosciurus pygerythrus* (Hoary-bellied squirrel), *Dremomys lokriah* (Orange-bellied Himalayan squirrel), *Petaurista petaurista* (Common flying squirrel), *Bandicota indica* (Large bandicoot rat) and *Hystrix brachyuran* (Chinese porcupine);

**AND WHEREAS**, the Sanctuary is astonishingly rich in avifauna and supports 105 bird species including *Lophura leucomelanos* (Kalij pheasant), *Picus flavinucha* (Greater yellow nape woodpecker), *Megalaima lineate* (Lineated barbet), *Halcyon coromanda* (Ruddy kingfisher), *Centropus bengalensis* (Lesser coucal), *Ducula badia* (Mountain imperial pigeon), *Otus spilocephalus* (Mountain scopes owl), *Chalcophaps indica* (Emerald dove), *Spilornis cheela* (Crested serpent eagle), *Cissa chinensis* (Green magpie), *Prinia hodgsonii* (Grey-breasted prinia), *Dicrurus remifer* (Lesser racket-tailed drongo), *Chaimarrornis leucocephalus* (White-capped water redstart), *Sitta castanea* (Chestnut-bellied nuthatch), *Phylloscopus trochiloides* (Greenish leaf warbler), *Garrulax pectoralis* (Greater-necklace laughing thrush), *Xiphirhynchus superciliaris* (Slender-billed scimitar babbler), *Minla ignotincta* (Red-tailed minla), *Alcippe rufogularis* (Rufous-throated fulvetta), *Yuhina castaniceps* (Straited yuhina), *Paradoxornis gularis* (Grey-headed parrotbill), *Arachnothera magna* (Streaked spider hunter), *Dendronanthus indicus* (Forest wagtail), *Anthus rufulus* (Paddy field pipit) and *Lonchura punctulata* (Scaly-breasted munia);

**AND WHEREAS**, the Sanctuary conserves and supports about 25 important amphibians and reptiles species. The important reptile species are *Pyxidea mouhoti* (Keelbox turtle), *Gekko gekko* (Tockay), *Ptyctolaemus gularis* (Blue throated forest lizard), *Mubaya carinata* (Common sunskink), *Takydromus sexlineatus* (Asian long tailed grass lizard), *Varanus bengalensis* (Monitor lizard), *Typhlops diardi* (Diard's blind snake), *Python molurus bivittatus* (Burmese python), *Coeloganthus radius* (Copperhead snake), *Pareas monticola* (Assam snail eater), *Ptyas korros* (Indo-Chinese rat snake), *Dendrolaphis pictus* (Painted bronzeback), *Boiga gokool* (Eastern gamma), *Ophiophagus hannah* (King cobra) and *Trimerurus yunanensis* (Green pit viper). The 5 amphibian species are *Duttaphrynus melanostictus* (Common toad), *Hyla annectans* (Indian hylid frog), *Microhyla ornate* (Ornamental pigmy frog), *Amolops assamensis* (Assamese cascade frog) and *Rhacophorus maximus* (Large tree frog);

**AND WHEREAS**, the Sanctuary supports 11 fish species including *Anguilla bengalensis* (Long fin eel), *Salmastoma bacaila* (Large razor belly minnow), *Danio aequipinnatus* (Dorikana), *Barilius barna* (Barna braila), *Punticus sarana* (Chiniputhi), *Chagunius chagunio* (Kentahputhi), *Gara gotyla* (Gara), *Labeo pangisia* (Silghoria), *Tor tor* (Tor mahseer), *Tor putitora* (Golden Mahseer), and *Wallago attu* (Borali);

**AND WHEREAS**, the Sanctuary also conserves, protect and provides shelter to one rare floral species, *Psiloum nudum*, and one endangered faunal species, Hoolock Gibbon;

**AND WHEREAS**, the Sanctuary is home to a variety of flora, fauna and avifauna, and provides protection to rare and endangered species of wildlife endemic. Hence, it is necessary to conserve and protect the area around the Sanctuary from ecological and environmental point of view to protect and propagate the biodiversity therein and its environment;

**NOW THEREFORE**, in exercise of the power conferred by sub-section(1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act 1986 (29 of 1986) read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area of 117.0 Square Kilometers with varying extents from 0.0 Kilometers (the North, West and South side's boundary of Sanctuary flanked by Namdapha Tiger Reserve, therefore, 0.0 Km is proposed) to 5.0 Kilometers around the boundary of Kamlang Wildlife Sanctuary in the state of Arunachal Pradesh as Kamlang Wildlife Sanctuary-Eco-Sensitive Zone (herein after referred to as the Eco-Sensitive Zone), details of which are as under, namely:-

**1. Extent and Boundaries of Eco-Sensitive Zone:-**

- (1) The area of the Eco-Sensitive Zone shall be of 117.0 Sq Km. The extent of Eco-Sensitive Zone shall be from 0.0 Km to 5.0 Km around the boundary of Sanctuary.
- (2) The boundary description of the Eco-Sensitive Zone around the Kamlang Wildlife Sanctuary is appended as Annexure-I.
- (3) Geo-coordinates of the Kamlang Wildlife Sanctuary and its Eco-Sensitive Zone in terms of Global Positioning System coordinates is appended as Annexure-II.
- (4) The Google earth map of Eco-Sensitive Zone is appended as Annexure-III;
- (5) Map of the Kamlang Wildlife Sanctuary Eco-Sensitive Zone along with geo-coordinates is appended as Annexure-IV.
- (6) State map showing the location of Kamlang Wildlife Sanctuary in Arunachal Pradesh state is appended as Annexure-V.

**2. Zonal Master Plan for the Eco-Sensitive Zone:-**

1. The State Government shall, for the purpose of effective management of the Eco-Sensitive Zone, prepare a Zonal Master Plan within a period of two years from the date of publication of Final Notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this Notification for approval of Competent Authority in the State Government.
2. The Zonal Master Plan for Eco-Sensitive Zone shall be prepared by the State Government in such manner as is specified in this Notification and also in consonance with the relevant Central and State laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.
3. The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following State Departments for integrating the ecological and environmental considerations into the proposed plan:
  - i. Environment Department
  - ii. Forest and Wildlife Department
  - iii. Agriculture & Horticulture Department
  - iv. Land Revenue and Settlement Department
  - v. Rural Development Department
  - vi. Urban development Department
  - vii. Municipal Department
  - viii. Panchayati Raj Department
  - ix. Tourism including Eco-tourism Department
  - x. Irrigation and Flood Control Department
  - xi. Public Works Department
4. The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this Notification and the Zonal Master Plan

shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.

5. The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded and degraded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of the local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.
6. The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area such as park and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies.
7. The Zonal Master Plan shall be supported by maps giving details of existing and proposed land use features.
8. The Zonal Master Plan shall regulate development in Eco-Sensitive Zone and adhere to prohibited, regulated activities listed in Table and also ensure and promote the eco-friendly development for livelihood security of local communities.
9. The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.
10. The Zonal Master Plan so approved shall be the reference document for the State and District level Eco-Sensitive Zone Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this Notification.

### 3. Measures to be taken by State Government:-

The State Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this Notification, namely:

#### 1. Landuse:

- (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-Sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential complex or industrial activities.
- (b) Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purpose other than that specified at part (a), within the Eco-Sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central/State Government as applicable and vide provisions of this Notification, to meet the residential needs of the local residents such as:
  - (i) Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;
  - (ii) Construction and renovation of infrastructure and civic amenities;
  - (iii) Small scale industries not causing pollution;
  - (iv) Cottage industries including village industries;
  - (v) Convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and
  - (vi) Promoted activities and activities given under para 4.
- (c) Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of State Government and without compliance of the provisions of article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):
- (d) Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-Sensitive Zone shall be corrected by the State Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

- (e) Provided also that the above correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph.
- (f) Provided also that there shall be no consequential reduction in the green area such as forest area and agriculture area. Efforts shall be made to reforest the unused, denuded or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat and biodiversity restoration activities.
2. **Natural water bodies:** The catchment areas of all natural rivers/channels/springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan. The strict guidelines shall be drawn up by the State Government to prohibit development activities at or near these areas.
3. **Tourism/ Eco-tourism:**
- (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-Sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-Sensitive Zone.
- (b) The Eco-Tourism Master Plan shall be prepared by Department of Tourism in consultation with State Departments of Environment and Forests.
- (c) The Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.
- (d) The activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:-
- (i) No new construction of hotels and resorts shall be allowed within 1.0 km from the boundary of the Kamlang Wildlife Sanctuary or up to the extent of the ESZ whichever is nearer. However, beyond the distance of 1.0 km from the boundary of the Sanctuary till the extent of Eco-Sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for Eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan.
- (ii) All new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-Sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism;
- (iii) Until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel /resort or commercial establishment construction is permitted within ESZ area.
4. **Natural Heritage:** All sites of valuable natural heritage in the Eco-Sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.
5. **Man-made heritage sites:** Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-Sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as a part of the Zonal Master Plan.
6. **Noise pollution:** Prevention and control of noise pollution in the Eco-Sensitive Zone shall be complied with in accordance with Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment (Protection) Act, 1986 and amendments thereto.
7. **Air pollution:** Prevention and control of air pollution in the Eco-Sensitive Zone shall be complied with in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and rules made thereunder and amendments thereto.
8. **Discharge of effluents:** Discharge of treated effluent in Eco-Sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environmental (Protection) Act, 1986 and rules made thereunder or standards stipulated by State Government whichever is more stringent.
9. **Solid wastes:** Disposal and management of solid wastes shall be as under:-

- (a) The solid waste disposal and management in Eco-Sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016 and published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forests and Climate Change vide Notification number S.O. 1357 (E), dated 8<sup>th</sup> April, 2016 as amended from time to time and the relevant rules notified by the state Government;
- (b) Safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-Sensitive Zone.

**10. Bio-medical waste:** Bio-medical waste management shall be as under:

- (a) The bio-medical waste disposal in the Eco-Sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change vide Notification number GSR 343 (E), dated the 28<sup>th</sup> March, 2016 as amended from time to time.
- (b) Safe and Environmentally Sound Management (ESM) of bio-medical wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within the Eco-Sensitive Zone.

**11. Plastic Waste Management:** The plastic waste management in the Eco-Sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change vide Notification number G.S.R. 340(E), dated the 18th March, 2016, as amended from time to time.

**12. Construction and Demolition Waste Management:** The management of construction and demolition waste in the Eco-Sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change vide Notification number G.S.R. 317(E), dated the 29th March, 2016, as amended from time to time.

**13. E-waste Management:** The e-waste management in the Eco-Sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.

**14. Vehicular traffic:** The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the Competent Authority in the State Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.

**15. Vehicular Pollution:** The prevention and control of vehicular pollution shall be complied with in accordance with applicable laws. Efforts to be made for use of cleaner fuel for example CNG, LPG, etc.

**16. Industrial Units:**

- (i) On or after the publication of this Notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be allowed to be set up within the Eco-Sensitive Zone.
- (ii) Only non-polluting industries shall be allowed within ESZ as per classification of Industries in the Guidelines issued by Central Pollution Control Board in February 2016, unless so specified in this Notification. In addition, non-polluting cottage industries shall be promoted.

**17. Protection of Hill Slopes:** The protection of hill slopes shall be as under:

- (a) The Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted.
- (b) No construction on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion shall be permitted.

**18.** The Central Government and the State Government shall specify other additional measures, if it considers necessary, in giving effect to the provisions of this Notification.

**4. List of activities prohibited or to be regulated within the Eco-Sensitive Zone:-**

All activities in the Eco-Sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) and the rules made thereunder including the Coastal Regulation Zone (CRZ), 2011 and the Environmental Impact Assessment (EIA) Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972 (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:

**TABLE**

S No	Activity	Description
(1)	(2)	(3)
<b>A. Prohibited Activities</b>		
1.	Commercial mining	(a) All new and existing (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units are prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of <i>bona fide</i> local residents including digging of earth for construction or repair of houses and for manufacture of country tiles or bricks for housing and for other activities.  (b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated 04.08.2006 in the matter of T. N. Godavarman Thirumulpad Vs. UOI in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated 21.04.2014 in the matter of Goa Foundation Vs. UOI in W.P.(C) No.435 of 2012.
2.	Setting of industries including new oil and gas exploration causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.)	(a) No new industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-Sensitive Zone shall be permitted. (b) Only non-polluting industries shall be allowed within ESZ as per classification of Industries in the Guidelines issued by Central Pollution Control Board in Feb 2016, unless so specified in this Notification. In addition, non-polluting cottage industries shall be promoted.
3.	Establishment of major thermal and major hydroelectric project	Prohibited (except as otherwise provided) as per applicable laws.
4.	Use or production or processing of any hazardous substances	Prohibited (except as otherwise provided) as per applicable laws.
5.	Discharge of untreated effluents in natural water bodies or land area	Prohibited (except as otherwise provided) as per applicable laws.
6.	Setting of new saw mills	No new or expansion of existing saw mills shall be permitted within the Eco-Sensitive Zone.
7.	Setting up of brick kilns	Prohibited (except as otherwise provided) as per applicable laws.
8.	Commercial use of fire wood	Prohibited (except as otherwise provided) as per applicable laws.
<b>B. Regulated Activities</b>		
9.	Commercial establishment of hotels and resorts	(a) No new commercial hotels and resorts shall be permitted within 1.0 km of the boundary of the Protected Area or up to the extent of Eco-Sensitive Zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for Eco-tourism activities.  (b) Provided that, beyond 1.0 km from the boundary of the Protected Area or up to the extent of Eco-Sensitive Zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Tourism/Eco-tourism Master Plan and guidelines as applicable.
10.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate, companies	Regulated under applicable laws.
11.	Construction activities	(a) No new commercial construction of any kind shall be permitted within 1.0 km from the boundary of the Protected Area or up to extent of

		<p>the Eco-Sensitive Zone whichever is nearer:</p> <p>(b) Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities listed in sub-paragraph (1) of paragraph 3 as per building byelaws to meet the residential needs of the local residents such as:</p> <p>(i) Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;</p> <p>(ii) Construction and renovation of infrastructure and civic amenities;</p> <p>(iii) Small scale industries not causing pollution termed as per Classification done by Central Pollution Control Board of February 2016;</p> <p>(iv) Cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stays; and</p> <p>(v) Promoted activities listed in this Notification.</p> <p>(c) Provided that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any.</p> <p>(d) Beyond 1.0 km it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.</p>
12.	Small scale non-polluting industries	Non-polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February 2016 and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-Sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
13.	Felling of Trees	<p>(a) There shall be no felling of trees on the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the competent authority in the State Government.</p> <p>(b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or State Act and the rules made thereunder.</p>
14.	Collection of Forest produce or Non-Timber Forest Produce (NTFP)	Regulated under applicable laws.
15.	Erection of electrical and communication towers and laying of cables and other infrastructures	<p>Regulated under applicable law.</p> <p>Underground cabling may be promoted.</p>
16.	Infrastructure including civic amenities	Shall be done with mitigation measures, as per applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
17.	Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads	Shall be done with mitigation measures, as per applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
18.	Under taking other activities related to tourism like over flying the Eco-Sensitive Zone area by hot air balloon, Microlites, helicopter, drones etc.	Regulated under applicable law.
19.	Protection of Hill Slopes and river banks	Regulated under applicable laws.
20.	Movement of vehicular traffic at night	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
21.	Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries	Permitted under applicable laws for use of locals.
22.	Discharge of treated waste water/effluents in natural water	The discharge of treated waste water/effluents shall be avoided to enter into the water bodies. Efforts to be made for recycle and reuse of treated

	bodies or land area	waste water. Otherwise the discharge of treated waste water/effluent shall be regulated as per applicable laws.
23.	Commercial extraction of surface and ground water	Regulated under applicable law.
24.	Open well, borewell etc. for agriculture or other usage	Regulated and the activity should be strictly monitored by the appropriate authority.
25.	Use of plastic bags	Use of polythene bags are permitted within the Eco-Sensitive Zone. However, based on specific requirement, it shall be regulated under applicable laws.
26.	Introduction of exotic species	Regulated under applicable laws.
27.	Eco-tourism	Regulated under applicable laws.
28.	Commercial sign boards and hoardings	Regulated under applicable laws.
<b>C. Promoted Activities</b>		
29.	Rain water harvesting	Shall be actively promoted.
30.	Organic farming	Shall be actively promoted.
31.	Adoption of green technology for all activities	Shall be actively promoted.
32.	Cottage industries including village artisans etc.	Shall be actively promoted.
33.	Use of renewable energy and fuels	Biogas, solar light etc. to be actively promoted.
34.	Agro-Forestry	Shall be actively promoted.
35.	Use of eco-friendly transport	Shall be actively promoted.
36.	Skill development	Shall be actively promoted.
37.	Restoration of habitat/ degraded land/ forests	Shall be actively promoted.
38.	Environmental awareness	Shall be actively promoted.

**5. Monitoring Committee:-** In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986), the Central Government hereby constitutes a district level Monitoring Committee for effective monitoring of the Eco-Sensitive Zone, which shall comprise of, namely:-

- |        |  |                   |
|--------|--|-------------------|
| (i)    | Deputy Commissioner, Lohit District, Tezu, Arunachal Pradesh   | -Chairman         |
| (ii)   | Member Secretary, Arunachal Pradesh State Pollution Control Board, Itanagar  | -Member           |
| (iii)  | Representative of Urban Development Department, Lohit District, Tezu, Arunachal Pradesh  | -Member           |
| (iv)   | Representative of Rural Development Department, Lohit District, Tezu, Arunachal Pradesh  | -Member           |
| (v)    | Representative of Public Works Department, Lohit District, Tezu, Arunachal Pradesh   | -Member           |
| (vi)   | One expert in Ecology from reputed institution or university of Arunachal Pradesh State to be nominated by the Government of Arunachal Pradesh                                   | -Member           |
| (vii)  | Representative of non-governmental organization working in the field of Nature conservation (including heritage conservation) to be nominated by Government of Arunachal Pradesh | -Member           |
| (viii) | DFO, Kamlang Wildlife Sanctuary, Wakro, Arunachal Pradesh  | -Member Secretary |

**6. Terms of Reference:-**

- (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this Notification.



- (2) The tenure of the Committee shall be three years or till the constitution of the new committee by the State Government and subsequently the Monitoring Committee would be constituted by the State Government.
  - (3) The activities that are covered in the Schedule to the Notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533(E), dated the 14<sup>th</sup> September, 2006, and are falling in the Eco-Sensitive Zone, except the prohibited activities as specified in column(3) of the table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinized by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said Notification.
  - (4) The activities that are not covered in the Schedule to the Notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533(E), dated the 14<sup>th</sup> September, 2006 but are falling in the Eco-Sensitive Zone, except the prohibited activities as specified in column (3) of the table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinized by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.
  - (5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Collector or the concerned work in-charge shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986 against any person who contravenes the provisions of this Notification.
  - (6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.
  - (7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on 31<sup>st</sup> March of every year by 30<sup>th</sup> June of that year to the Chief Wildlife Warden in the State Ministry of Environment, Forest and Climate Change as per pro forma appended at Annexure VI.
  - (8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.
7. The Central Government and State Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this Notification.
  8. The provisions of this Notification are subject to the orders, if any, passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or the High Court or National Green Tribunal.

[F. No. 25/3/2015-ESZ/RE]

LALIT KAPUR, Scientist 'G'

**ANNEXURE-I****Boundary description of the Eco-Sensitive Zone around the Kamlang Wildlife Sanctuary**

Starting from the north-west corner of the sanctuary at geo co-ordinates 27°54' 31.608"N and 96°27'11.279"E the boundary goes eastwards direction along the sanctuary boundary, zero meter ESZ being Kamlang Reserve Forest, passing through points at geo co-ordinates 27°52'57.191"N and 96° 33'3.089"E, 27°51'12.139"N and 96°36'37.231"E, 27°50'49.139"N and 96°40'55.499"E, 27°49'44.638"N and 96° 41'5.392"E, thence, up to the north-east corner of the sanctuary at geo co-ordinates 27°47'29.976"N and 96°47'15.832"E.

Thence, eastwards about 5.0 Km up to the point at geo co-ordinates 27°46'51.791"N and 96°50'11.706"E. Thence, southwards 5.0 Km parallel to the sanctuary boundary passing through points 27°44'28.039"N and 96°48'34.740"E and 27°41'35.581"N and 96°51'1.174"E, 27°40'25.723"N and 96°52'5.891"E, 27°36'51.365"N and 96°54'5.335"E.

Thence, westwards for 5.0 Km up to the sanctuary boundary at point 27°37'29.154"N and 96°51'16.495 "E. Thence, further westwards along the sanctuary boundary, zero Km ESZ being Namdapha Tiger Reserve passing through points 27°36'56.866"N and 96°46'32.365"E, 27°39'37.264"N and 96°42'22.986"E, 27°38'16.958"N and 96°31'28.970"E and up to point 27°39'2.750"N and 96°25'48.349"E.

Thence, northwards along the sanctuary boundary, zero Km ESZ being Kamlang Reserve Forest passing through the points at geo co-ordinates 27°41'4.798"N and 96°25'1.650"E, 27°43'57.083"N and 96°24'32.742"E and 27°47'51.403"N and 96°27'35.352"E, then up to the starting point.

**ANNEXURE-II****Geo-coordinates of Kamlang Wildlife Sanctuary and its Eco-Sensitive Zone:****Geo-coordinates of the prominent points on boundary of PA**

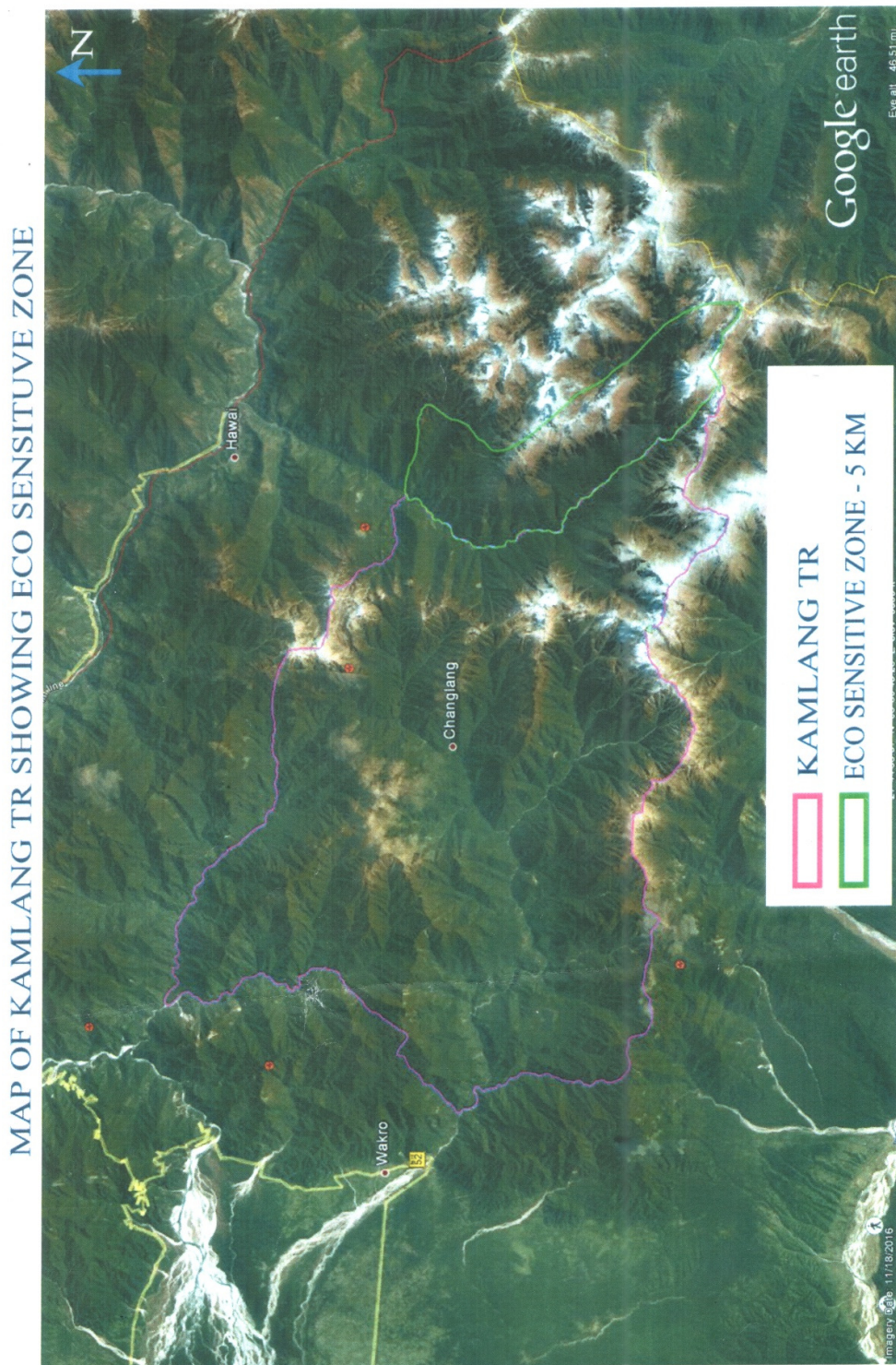
Sl. No.	Longitude (E) (DMS Format)	Latitude (N) (DMS Format)
1	96°27'11.279"	27°54'31.608"
2	96°33'3.089"	27°52'57.191"
3	96°36'37.231"	27°51'12.139"
4	96°40'55.499"	27°50'49.139"
5	96°41'5.392"	27°49'44.638"
6	96°47'15.832"	27°47'29.967"
7	96°45'12.222"	27°45'4.270"
8	96°48'26.244"	27°40'4.886"
9	96°49'22.267"	27°38'53.574"
10	96°51'16.495"	27°37'29.154"
11	96°46'32.365"	27°36'56.866"
12	96°42'22.986"	27°39'37.264"
13	96°31'28.970"	27°38'16.958"
14	96°25'48.349"	27°39'2.750"
15	96°25'1.650"	27°41'4.798"
16	96°24'32.742"	27°43'57.083"
17	96°27'35.352"	27°47'51.403"

**Geo-coordinates of the prominent points on Eco-Sensitive Zone Boundary**

Sl. No.	Longitude (E) (DMS Format)	Latitude (N) (DMS Format)
1	96°27'11.279"	27°54'31.608"
2	96°33'3.089"	27°52'57.191"
3	96°36'37.231"	27°51'12.139"
4	96°40'55.499"	27°50'49.139"
5	96°41'5.392"	27°49'44.638"
6	96°47'15.832"	27°47'29.976"
6A	96°50'11.706"	27°46'51.791"
7A	96°48'34.740"	27°44'28.039"
8A	96°51'1.174"	27°41'35.581"
9A	96°52'5.891"	27°40'25.723"
10A	96°54'5.335"	27°36'51.365"
10	96°51'16.495"	27°37'29.154"
11	96°46'32.365"	27°36'56.866"
12	96°42'22.986"	27°39'37.264"
13	96°31'28.970"	27°38'16.958"
14	96°25'48.349"	27°39'2.750"
15	96°25'1.650"	27°41'4.798"
16	96°24'32.742"	27°43'57.083"
17	96°27'35.352"	27°47'51.403"

**ANNEXURE-III**

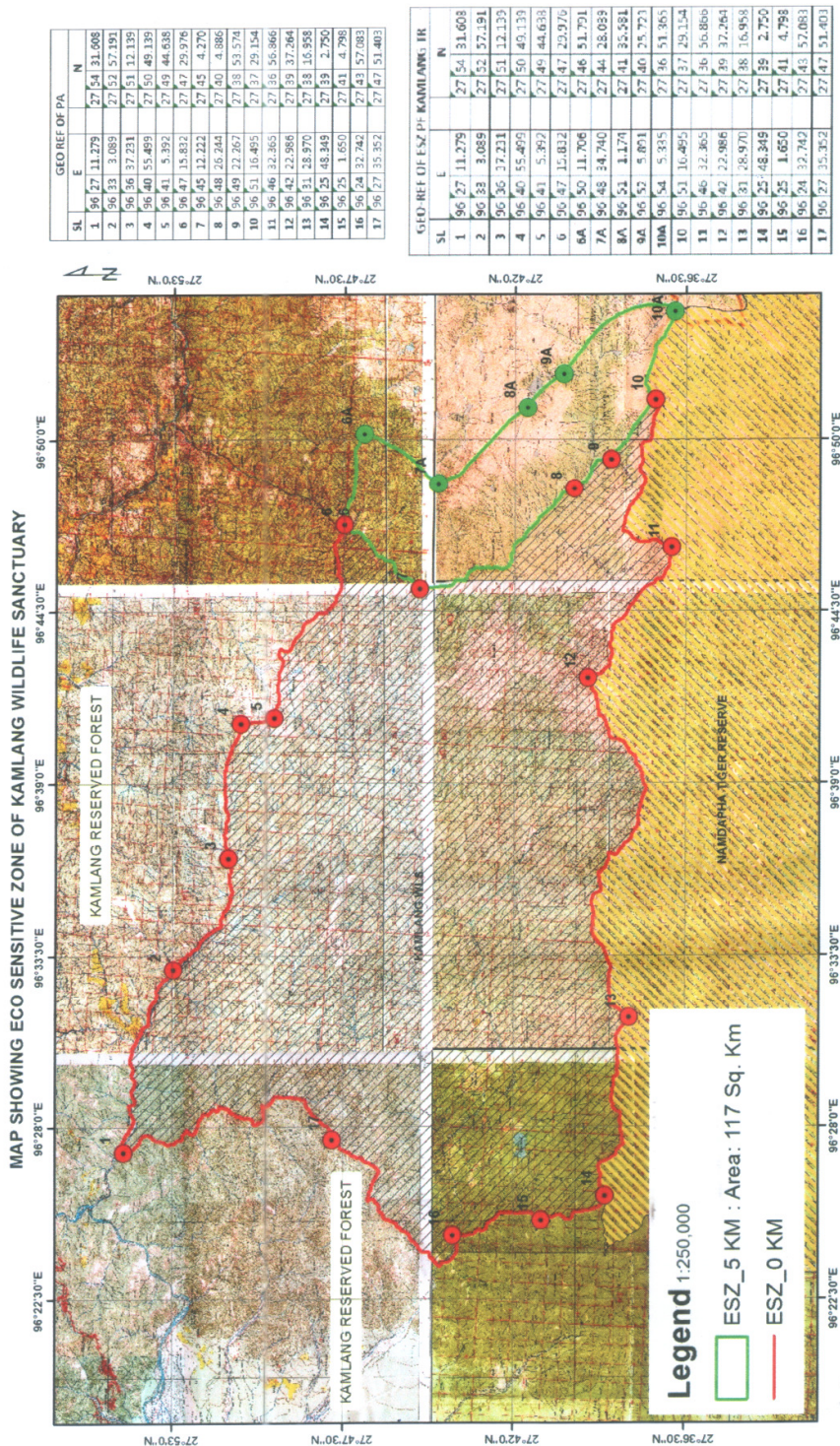
**Google earth map of the Kamlang Wildlife Sanctuary and its Eco-Sensitive Zone**



**ANNEXURE-IV**

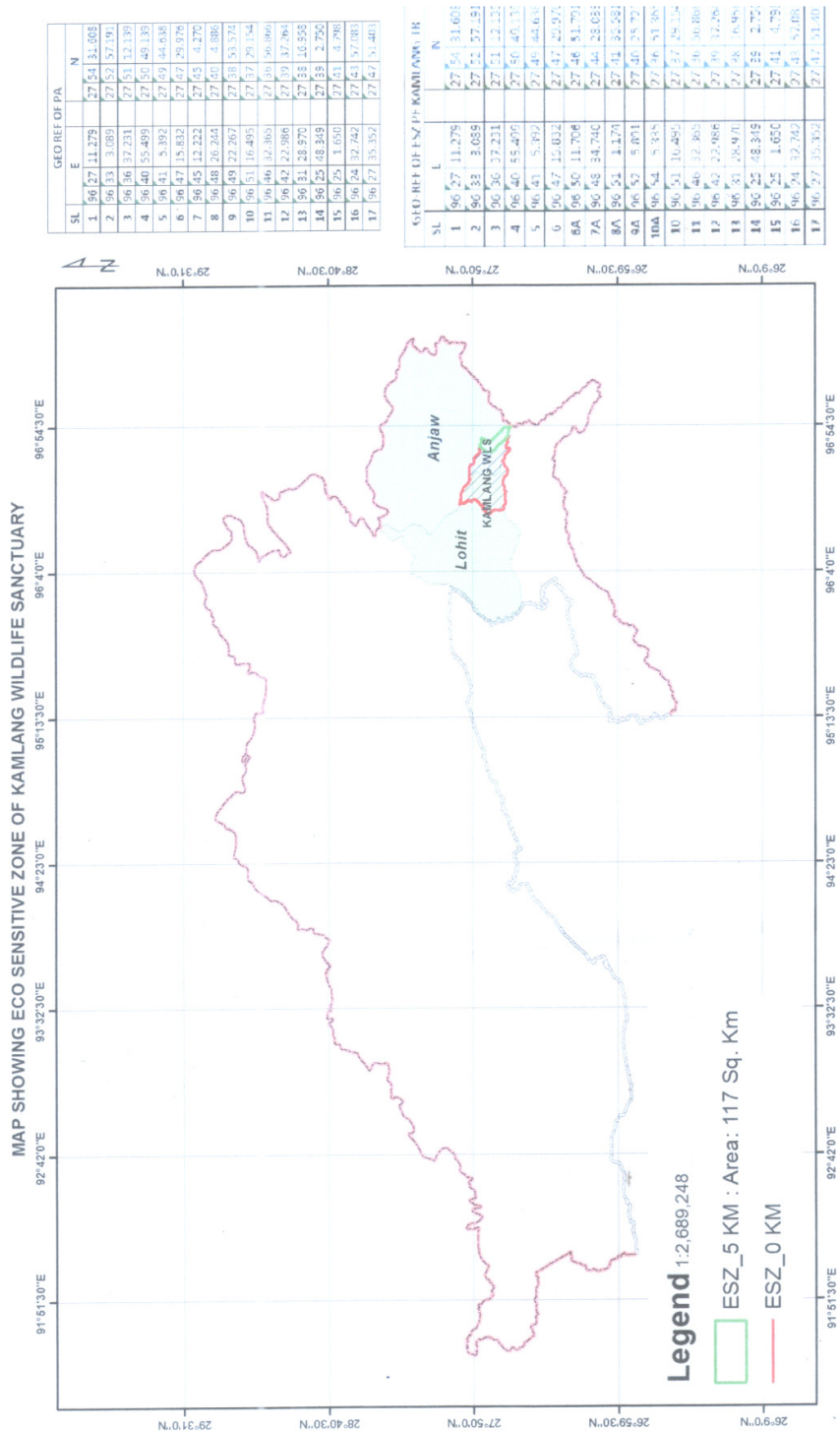
**Map of the Kamlang Wildlife Sanctuary Eco-Sensitive Zone along with geo-coordinates**

*Annexure - I*



**ANNEXURE-V**

Map showing location of Kamlang Wildlife Sanctuary Eco-Sensitive Zone on State map



**ANNEXURE-VI****Eco-Sensitive Zone Monitoring Committee- Pro forma of Action Taken Report:-**

1. Number and date of Meetings:
2. Minutes of the meetings: (Mention main noteworthy points. Attach Minutes of the meeting as separate Annexure)
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan:
4. Summary of cases dealt for rectification of error apparent on face of land record: (Details may be attached as separate Annexure)
5. Summary of cases scrutinized for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006: (Details may be attached as separate Annexure)
6. Summary of cases scrutinized for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006: (Details may be attached as separate Annexure)
7. Summary of complaints lodged under Section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986:
8. Any other matter of importance: